ओ३म्

दशनियमशिखरिणी

अर्थात्

आर्यसमाज के दशों नियमों का
शिखरिणी छन्दों में अनुवाद

श्री १०८ स्वामी दयानन्दसरस्वती जी
के शिष्य

पण्डित ज्वालादत्त कृत

सरस्वती यन्त्रालय

इटावा ॥
में
मुद्रित हुई ॥

चैत्र कृष्ण सं० १९५५

ओ३म् ॥

दश-नियम-भास्करिणी ॥
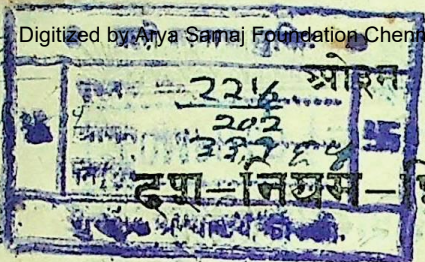
प्रपश्यन् देशस्यावनतिमतिदुःखेन मतिमान् दयानन्दस्वामी, सदयहृदयो भूयतिवरः। कथञ्चिद्देशस्योन्नतिरिति विचिन्त्यार्यसमितेः सदुद्देश्यैर्दिग्भिर्निज सदुपदेशं द्रुतमदात् ॥१॥

मतिमान् दयालुचित्त सन्यासियों में श्रेष्ठ श्री मान् दयानन्द सरस्वती स्वामी जी ने देश की अवनति देखि यह विचार करि कि किसी प्रकार देशोन्नति हो आर्यसमाज के दश उद्देश्यों (असूलों) से अपना उत्तम उपदेश लोगों को शीघ्र दिया ॥ १ ॥

तदुद्देश्यान् देशोन्नतिसुखकरान् संस्कृतगिरा ब्रवीम्येतान् विद्यारसिकजनमो-

दाय सकलान् । अविद्याजन्यं यद्दुरित-
मपहन्तुंश्च पठतां ग्रहीतॄणां मूलं सतत
मनुकूलं श्रुतिगिराम् ॥२॥

विद्यारसिक जनों के हर्ष के लिये निरन्तर जो अ-
नुकूल वेदवाणियों का मूल उस को ग्रहण करते और
नियमों को पढ़ते हुए सज्जनों के अज्ञानोत्पन्न दुरित
को दूर करने वाले आर्यसमाज के उन उद्देश्यों (नि-
यमों) को संस्कृत वाणी से कहता हूं ॥२॥

नियमाः ॥१०॥

१—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने
जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है ॥

१—प्रतीता या विद्या ऋतमिति स-
मस्ताः परमतः प्रतीयन्ते ताभिः प्रियत-
तम पदार्था इह च ये । परं मूलन्तेषां
प्रथममखिलानामविरतम्, परेशः सर्व-
ज्ञः श्रुतिनिकर इत्थं प्रवदति ॥३॥

२–ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार सर्वश
क्तिमान् न्यायकारी दयालु अजन्मा अनन्त निर्विका
अनादि अनुपम सर्वाधार सर्वेश्वर सर्वव्यापक सर्वा
न्तर्यामी अजर अमर अभय नित्य पवित्र और सृष्टि
कर्त्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है ॥

२--सदीशश्चित्पूतोऽतनुरनुपमानन्द-
नयकृत् स सर्वान्तर्यामी भयमृतिजरा-
द्यन्तरहितः। उपास्यः सर्वेशाधृतिरवि-
कृतिः सृष्टिकृदजो दयालुः सर्वव्यापक-
निखिलशक्तिर्ध्रुव इति ॥ ४ ॥

३–वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़
ना पढ़ाना सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म है।

३--ऋतानां विद्यानां श्रुतिसमुदितिः
पुस्तकमिति श्रुतीनां सर्वासामभिपठन-
मध्यापनमनु । विधेयं सर्वैस्तच्छ्रवण-

मनिशं आवश्यमथो। अयं सर्वार्य्याणां परमधर्म्मोऽस्ति व्यवसितः ॥४॥

४—सत्यग्रहण करने और असत्य के त्याग करने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ॥

(५) ४—समुद्यत्नैः सत्यग्रहणकरणे सम्यगुचितं सदा भाव्यं सर्वैरनृतपरिहानौ सुहृदयैः ॥५॥

५—सब काम धर्मानुसार सत्य और असत्य को विचार कर के करना चाहिये ॥

(६) ५—अलं कार्य्याः कामाः अनिशमभिधर्मानुसरणा विमृश्यैतत्सर्वं किमृतमनृतं चेह पुरतः ॥६॥

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और समाजिक उन्नति करना ॥

६-समाजस्यास्यैतज्जगदुपकृतेरेव करणं परोद्देश्यः सर्वैरनिशमवधेयोनरवरैः। समुद्भाव्या भव्या त्रिषु समुचिता सून्नतिरतः। सुदक्षैः संलक्ष्यैः समितिवपुरात्मस्थिति सखे ॥७॥

७-सब से प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये ॥

(७)-यथायोग्यं सर्वैः सह सकलजातीय मनुजैः। प्रवर्त्यं सत्प्रीत्या व्यवहृतिषु धर्मानुसरणम् ॥

८- अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये ॥

८-अविद्याया नाशः प्रियतम विधेयो निजबलैरलं विद्यावृद्धिः सततमभिकार्या सुकृतिभिः ॥ ८ ॥

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये ॥

(९)—न वै सन्तोष्टव्यं निजनिजयथेष्टो-न्नतिवशात् पर प्रत्येकेन प्रतिजनाबि-धेयोन्नतिविधौ सुमन्तव्यं स्वीयोन्नति-रिति च सामाजिकजनाः समाजस्थो-द्दिष्टो नियमदशके ह्येष नवमः ॥ ९ ॥

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें ॥

(१०)—पराधीना वृत्तिः सकलमनुजैः सर्वसुहितं विधातुः संसेव्या प्रवरनियम-स्यावनविधौ परं प्रत्येकेन प्रसृभहित-कारिण्यविरतं स्वतन्त्राः स्युः सर्वे नि-यमदशमप्रेरितजनाः ॥ १० ॥

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,

२२८ हरिद्वार
२०३

पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है । इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर दस नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड आप को लगाया जायेगा ।